जनमानस में राम

सम्पादक

सरोज गुप्ता

Scanned with OKEN Scanner

जनमानस में राम

परामर्श एवं मार्गदर्शन
डॉ. श्रीराम परिहार, खण्डवा
डॉ. जी. एस. रोहित, सागर

डॉ. सरोज गुप्ता
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
पं. दीनदयाल उपाध्याय, शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अनुज्ञा

Scanned with OKEN Scanner

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-69-4

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं 1, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 400.00 रुपये

मुद्रक
थॉमसन प्रेस, (इण्डिया) लि., नई दिल्ली

JANMANAS MEIN RAM—A Critical Analysis *edited by* Saroj Gupta

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

आमुख		7
1. लोकमानस की राममयी चेतना	– *डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह*	15
2. सुशासन की परिकल्पना और गोस्वामी तुलसीदास का राम-राज्य	– *प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र*	20
3. बुन्देलखण्ड के रामभक्त मुसलमान कवि	– *डॉ. कामिनी*	30
4. ईसुरी की रामायन	– *डॉ. कुंजीलाल पटैल*	36
5. मानव संस्कृति और रामकथा सन्दर्भ	– *प्रो. नागेश दुबे*	49
6. महात्मा गाँधी और राम	– *डॉ. सरोज गुप्ता*	55
7. लोक-साहित्य में राम	– *डॉ. सुनीता शर्मा*	59
8. रामायण का अर्थ राम का यात्रा पथ	– *डॉ. निशा जैन*	71
9. राम हैं भारत की आत्मा	– *डॉ. ए.के. जैन*	76
10. गोस्वामी तुलसीदास : समन्वय एवं लोकमंगल की विराट चेष्टा	– *डॉ. माधुरी गर्ग*	79
11. बौद्ध जातक ग्रन्थों में रामकथा	– *डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव*	88
12. वाल्मीकि रामायण में 'शम्बूक वध' की प्रक्षिप्तता	– *डॉ. गोविन्द मसूरे*	97
13. राम की शक्ति पूजा में नाटकीयता	– *अजय कुमार चौधरी*	104
14. हिन्दी में रामकाव्य-परम्परा	– *डॉ. बसुन्धरा गुप्ता*	109
15. मार्कण्डेय रामायण	– *ज्योति सिंह*	116
16. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राम का चरित्र	– *भारती कोरी, मनोज कुमार*	121

Scanned with OKEN Scanner

17. पुराणों में वर्णित रामकथा	– शैला यादव	130
18. गुप्तकालीन स्थापत्य शिल्प में रामकथा	– गोविन्द सिंह दांगी	139
19. 'संशय की एक रात' में राम का चरित	– डॉ. रामचन्द्र रजक	144
20. मानव संस्कृति और रामकथा के सन्दर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की दार्शनिक दृष्टि एक समीक्षा	– अभय कुमार सेठ	154
21. महात्मा कबीर के राम	– डॉ. सरोज गुप्ता – डॉ. सत्या सोनी	158
22. विनयपत्रिका में तुलसी और मन	– डॉ. सरोज गुप्ता	162
सहायक लेखकों की सूची		168

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. सरोज गुप्ता

'बुन्देलखण्ड कनेक्ट' सम्मान से सम्मानित डॉ. सरोज गुप्ता शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। बुन्देलखण्ड की मातृ-भाषा बुन्देली, साहित्य एवं संस्कृति पर विगत वर्षों से कार्य कर रही हैं। महाविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की लघु एवम् वृहद परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अब तक तीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अभी हाल में बुन्देली का प्रामाणिक वृहद शब्द-कोश का प्रकाशन उ.प्र. भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा किया गया है। महाविद्यालय की एन.सी.सी. अधिकारी के रूप में कैप्टन के पद पर बारह वर्षों तक सेवाएँ देकर राष्ट्रीय-स्तर पर बुन्देलखण्ड की कई छात्राएँ आर्मी, पुलिस में विभिन्न पदों पर पदस्थ हैं। आपके निर्देशन में ग्यारह शोधार्थियों ने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है तथा विभिन्न शोधार्थी म.प्र. तथा उ.प्र. के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कर रहे हैं। डॉ. सरोज गुप्ता महाविद्यालय में विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध संगोष्ठियों की संयोजक व सचिव रही हैं। राष्ट्रीय स्तर के कई सम्मान आप समय-समय पर प्राप्त कर चुकी हैं।

प्रकाशित कृतियाँ—काव्य-संग्रह : काल-चक्र • **समीक्षा ग्रन्थ**— सियारामशरण गुप्त के साहित्य में समाज व संस्कृति • बुन्देली धरती : सर्जना और सृजन • बुन्देली संस्कृति और प्रमुख कवि • लोक-जीवन में बुन्देलखण्ड • सृजन और समीक्षा **सम्पादन एवम् संकलन**—प्रेम-पराग • अंक-महिमा • बुझौवल • खेल-गीत • हमारा बुन्देलखण्ड • स्वास्थ्य-परक गीत • माँ • बेटियाँ • समय • अपनों के वातायन से • सत्य से साक्षात्कार के कवि • मुक्तिबोध • माँ • साम्प्रदायिक सद्भाव एवम् राष्ट्रीय एकीकरण • सर्व-धर्म समभाव • लोक-साहित्य में सांस्कृतिक चेतना • लोक साहित्य और वैश्वीकरण • बुन्देली के स्वास्थ-परक गीत • प्रामाणिक वृहद बुन्देली शब्द-कोश (उ.प्र. भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा प्रकाशित) • विश्वभाषा साहित्य और रामकथा (अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार) • भारतीय वांग्मय और रामकथा (अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार) • बुन्देल-विभूति : डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया।

Scanned with OKEN Scanner

राम कितने धर्मों में व्याप्त हैं, यह हमारे लिए आश्चर्य का विषय है– बौद्ध, जैन, योग, अद्वैत वेदान्त, द्वैतमत, वैष्णव, शैव आदि-आदि जितने भी भारतीय धर्मास्था के विषय हैं, उनमें राम सर्वत्र हैं। साहित्य और उसकी विविध विधाएँ– महाकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य, एकार्थक, चम्पू, रूपक, उपरूपक, कथा, दूतकाव्य, श्लिष्टकाव्य आदि में सर्वत्र राम हैं। भारतीय आर्यभाषा की संस्कृत काव्य-परम्परा का श्रीगणेश आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण से ही होता है। प्राचीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश प्राचीन हिन्दी, हिन्दी लोकभाषा साहित्य के लिए राम जीवनाधार हैं। देश की हिन्दीतर भाषाएँ राममयी हैं। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया, बँगला, पहाड़ी, कश्मीरी, पंजाबी, सिन्धी आदि भारतीय भाषाओं में 12वीं शती से विविध रूपों में रामकाव्य लिखे जा रहे हैं।

संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं तथा आर्येतर भाषाओं में लिखी गयी 'रामायण' शीर्षक ग्रन्थों की संख्या कितनी है– उसका आज कोई मानक साक्ष्य नहीं है– अतः हम भी, गोस्वामी तुलसीदास जी के ही शब्दों में कहते हैं–''रामायन सत कोटि अपारा।'' रामकथा के विविध पात्रों–राम, लक्ष्मण, भरत, कौसल्या, दशरथ, कैकेयी, उर्मिला आदि पर कितने ग्रन्थ लिखे गये, इसका कोई एक स्थान पर हमारे संकलित साक्ष्य नहीं है। रामकथाएँ देश की श्लिष्ट भाषाओं में ही नहीं, उनकी लोकभाषाओं में जन-जन के पास किन रूपों में हैं– हमने कभी उनकी शोध तालिका बनाने का प्रयास नहीं किया।

— डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
निदेशक, आयोध्या शोध संस्थान,
लखनऊ (उ.प्र.)

₹ 400
9 789386 810694

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली–110032

Scanned with OKEN Scanner